प्रा. डॉ. प्रभाकर पां. पाठक
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
दयानंद महाविद्यालय,
सोलापूर

दि. २७ जून, १९८८

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर की एम. फिल परीक्षा के लिए सौ.जुबेदाबेगम इम्तियाज अत्तार ने मेरे निर्देशन में " नारीविषयक दृष्टिकोण : विविध आयाम (आधुनिक हिंदी काव्य के परिप्रेक्ष्य में) " शीर्षक प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध पूरा किया है। यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है।

मैं संस्तुति करता हूँ कि इसे परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

PRINCIPAL
DAMANI BHAIRURATAN FATEHCHAND
DAYANAND COLLEGE OF ARTS AND SCIENCE SHOLAPUR

शोध-निर्देशक

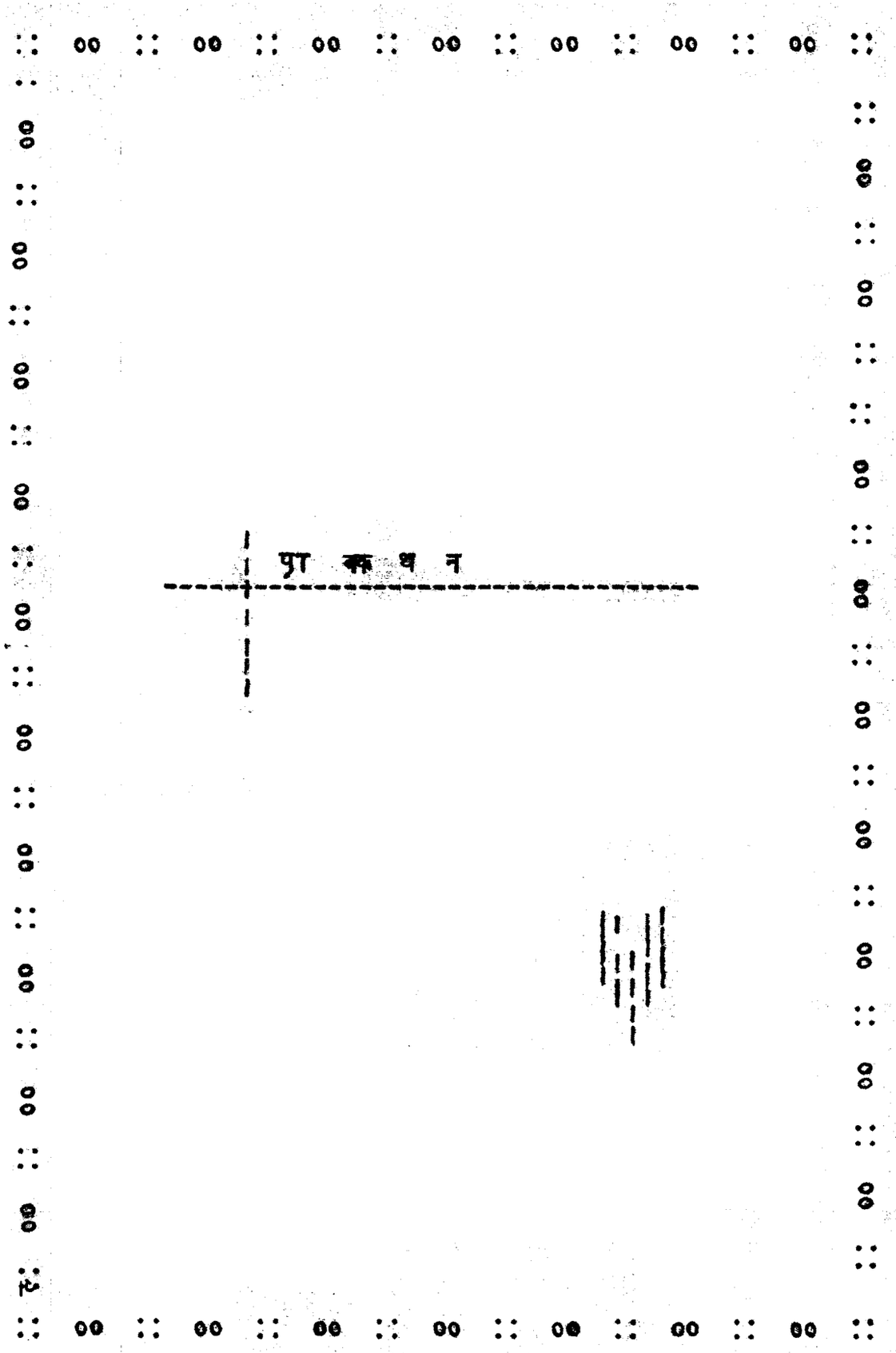
पुरा कथन

प्रा क्क थ न .....

' नारी जागरण ' , ' नारी-मुक्ति आंदोलन ' जैसे विषाय लेकर अनेक विचारक आज समाज में चेतना उत्पन्न करने का प्रयत्न कर रहे हैं, परंतु उसके पहले हिंदी काव्य के आधुनिक युग में अनेक कवियों ने नारी विषायक अपने दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करना शुरू किया था । उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश शासन के कारण देश में नवचेतना का जन्म हुआ, फलस्वरूप हमारे भारत देश को सामाजिक स्थिति में भी धीरे धीरे क्यों न हो परंतु परिवर्तन होता गया । नारी विषायक उदार , सहिष्णु दृष्टिकोण रखकर उसकी उन्नति के भी सरसक प्रयत्न आरंभ हुए । कुछ क्रियाओं की प्रतिक्रियाएं होना भी स्वाभाविक था, उनका प्रतिबिंब आधुनिक हिंदी काव्य में स्पष्ट होता दिखाई दिया । प्रस्तुत लेखिका का नारीसुलभ स्वभाव के कारण नारी-विषायक विविध दृष्टिकोण देखने की प्रवृत्ति होना स्वाभाविक था । विषाय बहुत बडा होते हुए भी कुछ प्रमुख कवियों की कुछ ही रचनाओं का आधार लेकर यह लघु शोध-प्रबंध पूरा करने का विनम्र प्रयास किया गया है । समय की पाबंदी और प्रस्तुत प्रबंध लेखिका की मर्यादाओं के कारण इस शोध-प्रबंध में कुछ त्रुटियाँ रहना स्वाभाविक है , परंतु आधुनिक हिंदी काव्य के एक शतक की कविताओं में कवियों के नारी-विषायक दृष्टिकोण के विविध आयाम ढूँढने का प्रामाणिक प्रयत्न किया गया है ।

इस विषाय को लेकर आजतक हिंदी में अध्ययन नहीं हुआ है । ' नारी-भावना ', ' नारी-चित्रण ' विषाय लेकर भले ही कुछ शोध-प्रबंध प्रस्तुत किए गए हों, परंतु कवियों के नारीविषायक दृष्टिकोण के विविध आयाम विषाय लेकर आज तक अध्ययन नहीं हुआ है । उस कमी की पूर्ति के उद्देश्य से यह विषाय

लेकर प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की रचना की गई है ।

वैदिक साहित्य से लेकर नारी के जिस रूपवैभव , भाव-भंगिमाओं तथा अपार शक्ति का वर्णन होता आया है वह अपने आप में एक रोचक विषाय है। नारी ने कभी माता बनकर कभी प्रियतमा बनकर तो कभी भगिनी और पुत्री के रूप में पुरुष को प्रेरणा का पियूष पिलाया है । नारी सदा से साहित्य-कारों के लिए आकर्षण का विषाय रही है । यह एक निर्विवाद सत्य है । विभिन्न विद्वानों ने नारी की महिमा का वर्णन अनेक प्रकार से किया है।

हिंदी साहित्य के विभिन्न कालखंडों में नारी-जीवन एवं नारीस्वभाव के पहलू स्पष्ट हुए हैं । अलग - अलग परिस्थितियों में नारी-स्वभाव की छटाएँ स्पष्ट हुई हैं । इन सबका अवलोकन एवं अध्ययन करने के प्रयत्न में इस लघु-शोध-प्रबंध की रचना हुई है ।

इस लघु शोध-प्रबंध को तीन कालों में विभाजित किया गया है ।

प्रथम है - छायावाद पूर्व काल (सन् १८६७ से १९१७) जिसके दो विख्यात कालखंड हैं-- (क) भारतेंदु युग और (ख) द्विवेदी युग ।

दूसरा है -- छायावाद युग - (१९१७ से १९३७) वह भी दो भागों में विभाजित है - (क) छायावादी प्रवृत्तियों का काव्य, जिसमें प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी जी का काव्य आता है । (ख) दूसरा छायावाद कालीन राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य-धारा की रचनाएँ जिसमें - मैथिलीशरण , माखनलाल, नवीन जी , दिनकर जैसे श्रेष्ठ कवियों की काव्य-रचनाएँ अंतर्भूत हैं ।

तीसरा है -- छायावादोत्तर काव्य (१९३७ से १९६७) जो तीन भागों में

विभाजित है --

(१) प्रगतिवादी प्रवृत्तियों की रचनाएँ

(२) हालावादी जिसमें एकमात्र कवि बच्चन जी की रचनाएँ हैं ।

(३) प्रयोगवादी ।

प्रथम प्रकरण में भारतीय नारी की महत्ता तथा समाज में उसके गौरव-पूर्ण स्थान स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है । नारी संबंधी विविध विद्वानों के मत प्रस्तुत किए गए हैं और प्राचीन ग्रंथों में अभिव्यक्त नारी संबंधी विभिन्न मतों का उल्लेख किया गया है । नीतिकारों का नारीविषयक दृष्टिकोण का भी विवेचन किया गया है ।

द्वितीय प्रकरण में विवेच्य युगपूर्व हिंदी काव्य में प्रतिबिंबित नारी-विषयक दृष्टिकोण का परामर्श लिया गया है । हिंदी के आदिकालीन कवियों के दृष्टिकोण के आयाम स्पष्ट किए गए हैं । इसके उपरांत संतों और भक्तों का नारीविषयक दृष्टिकोण स्पष्ट किया गया है । विभिन्न कालों की, विभिन्न प्रवृत्तियों के परिप्रेक्ष्य में नारी मन के महत्त्वपूर्ण पहलू खोजने का प्रयास किया गया है ।

तृतीय प्रकरण से विवेच्य विषय का अध्ययन हो जाता है । इस कालखंड का विचार दो भागों में किया गया है जिसमें बदलती हुई राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में नारी जीवन में जो परिवर्तन आए उनका विचार मुख्य रूप से किया गया है ।

चतुर्थ प्रकरण का आरंभ छायावादी कवियों की नारी के पक्ष में बदलती हुई दृष्टि और जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, ' निराला ' जी में अभिव्यक्त

नारी जीवन के प्रमुख आयामों का विचार किया गया है ।

छायावादी काव्य में विद्यमान परंतु छायावादी प्रवृत्ति को छोडकर राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा को अपनानेवाले ' दिनकर ' , ' नवीन ' मैथिलीशरण गुप्त जी जैसे कवियों का समावेश इसी अध्याय में किया गया है ।

पंचम प्रकरण में छायावादोत्तर काव्य के संदर्भ में प्रगतिवाद और प्रयोगवाद दोनों का विचार किया गया है । विस्तार भय के कारण प्रस्तुत प्रबंध-लेखिका ने अपने विषय का कालखंड १९६७ तक ही सीमित कर दिया है । इसलिए प्रयोगवाद के कुछ ही कवियों का दृष्टिकोण अभिव्यक्त कर पाई हैं ।

षाष्ठम प्रकरण में इस लघु शोध-प्रबंध का उपसंहार प्राचीन वैदिक काल से लेकर हिंदी साहित्य के आधुनिक युग तक की नारी संबंधी मान्यताओं, भावनाओं , नारी चित्रण के विभिन्न दृष्टिकोण को संक्षेप में स्पष्ट करते हुए निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न किया गया है ।

कृतज्ञता-ज्ञापन :

इस कार्य को पूर्णता तक लाने के लिए प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में अनेकों का सहयोग मिला है ।

मेरे गुरु एवं निर्देशक महोदय प्रा. प्रभाकर पां. पाठक जी की सत्-प्रेरणाओं के बिना मैं इस कार्य में अग्रसर होने का साहस नहीं कर सकती थी । मेरी अभिरुचि , अभ्यास गति और मति को देखते हुए उन्होंने विषय चुनाव से लेकर लेखन के दिशादिग्दर्शन तक मेरी पूरी - पूरी सहायता की है । अत: औपचारिक-आभार मात्र से , गुरुऋण से मुक्ति नहीं हो सकती । उनके प्रति कृतज्ञ भावना

किन शब्दों में व्यक्त करूँ !

दयानंद कॉलिज के प्राचार्य डॉ. झुंजुरवाड सर और अक्कलकोट कॉलेज के प्राचार्य यल्लट्टी दोनों तरफ से मुझे हमेशा प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलता रहा है । अत: इन दोनों के प्रति विनम्र भाव से अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ ।

इस लघु शोध-प्रबंध के लिए अनेक ग्रंथों की और काव्य-संग्रहों की आवश्यकता को पूर्ण करने के कार्य में दयानंद कॉलिज ग्रंथालय, वालचंद कॉलिज ग्रथालय, संगमेश्वर कॉलिज ग्रंथालय तथा अक्कलकोट कॉलिज ग्रंथालय का सहयोग मिला है। इसके अलावा मारवाडी समाज द्वारा संचालित ग्रंथालय के अधिकारी वर्ग के सहिष्णु व्यवहार के कारण मुझे उपयुक्त पुस्तकों का लाभ हुआ है । अत: इन सबके प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य मानती हूँ ।

इस लेखन के लिए उन सभी कवियों, लेखकों और विद्वानों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करना मैं अपना पुनीत कर्तव्य मानती हूँ, जिनकी कृतियों से मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में प्रेरणा, दिशा और सहायता प्राप्त हुई है ।

विनीत,

सौ. जु. इ. अत्तार

[सौ. जुबेदाबेगम इम्तियाज अत्तार]

अक्कलकोट

दिनांक : ३०।६।८८

विषय-सूची ....

वि ष य - सू ची

क्रम	विषय	पृष्ठ-संख्या
१.	प्रा क्क थ न	१ से ५
२.	प्रथम प्रकरण : भारतीय नारी	१ से २१
	समाज में उसका गौरवपूर्ण स्थान, विद्वानों के विचारों में भारतीय नारी , नारी का स्वरूप, दृष्टिकोण , नारी की महत्ता , नारी के विविध रूप - माता, पत्नी,बहन, पुत्री । प्राचीन ग्रंथों का (वेद, उपनिषद,पुराणसाहित्य, नीतिकारों का) नारी संबंधी दृष्टिकोण ।	
३.	द्वितीय प्रकरण : पृष्ठभूमि ..	२२ से ४०
	विवेच्य युगपूर्व काव्य - हिंदी के साहित्य में नारीविषयक दृष्टिकोण -	
	१. आदिकालीन कवियों का नारीविषयक दृष्टिकोण- सिद्ध साहित्य , नाथ साहित्य , रासो साहित्य ।	
	२. भारतीय संतों का नारी-विषयक दृष्टिकोण -- ज्ञानमार्गी शाखा - पतिव्रता का गौरव, नारी का प्रतीक, परमेश्वर को सूफी नारी रूप में देखते थे । अलौकिक रूप में तुलसी का दृष्टिकोण - सीता तथा राक्षसी नारी निंदा । सूर में राधा आदर्श ।	
	३. रीतिकाल में विलासप्रियता - नारी एक साधन (कामक्रीडा तथा मनोरंजन का) नारी का स्थूल चित्र ।	

..

४. तृतीय प्रकरण : आधुनिक हिंदी काव्य का छायावाद-पूर्व काल ४१ से ६९

१. भारतेंदु युगीन काव्य में प्रेम और सौंदर्य
२. द्विवेदी युग में - सती, वीर, बलिदानी, त्यागभावना से प्रेरित नारी
हरिऔध की प्रियप्रवास में राधा, गुप्त जी की रचनाओं में स्त्रीविषयक दृष्टिकोण ।

५. चतुर्थ प्रकरण : आधुनिक हिंदी काव्य के छायावादकालीन कवियों का दृष्टिकोण ७० से १०६

१. छायावादी कवियों का दृष्टिकोण - प्रकृति में नारी, प्रसाद की रचनाएँ, पंत, निराला, महादेवी आदि की रचनाएँ ।
२. छायावादेतर कवियों का नारीविषयक दृष्टिकोण -- दिनकर, नवीन, माखनलाल चतुर्वेदी, हरिवंशराय बच्चन-- मादकता की जीती-जागती प्रतिमा के रूप में ।

६. पंचम प्रकरण : हिंदी के छायावादोत्तर काव्य में नारीविषयक दृष्टिकोण १०७ से १३०

पंत, निराला , भगतीचरण वर्मा, पं. नरेंद्र शर्मा – द्रौपदी
प्रयोगवादी कविता में नारी के प्रति अभिव्यक्त दृष्टिकोण

७. षष्ठ प्रकरण : उ प सं हा र १३१ से १३८

८. सहायक एवं संदर्भ-ग्रंथ सूची ... १३९ से १४०

--०--